E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 09-07-2025
Accepted: 18-08-2025
Published: 10-10-2025

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 3; Issue 4; 2025; Page No. 196-202

जनजातीय समुदायों में शिक्षा तक पहुंच और साक्षरता में वृद्धि के बीच संबंध का विश्लेषण करना

[1]Kirti Verma and [2]Dr. Tejpal Singh

[1]Research Scholar, Vikrant University, Gwalior, Madhya Pradesh, India
[2]Professor, Vikrant University, Gwalior, Madhya Pradesh, India

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19978218

Corresponding Author: Kirti Verma

सारांश

भारत के जनजातीय समूहों का सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन विविधता से भरा है, जिसमें विभिन्न जातीय समूहों की अर्थव्यवस्था, तकनीक, धार्मिक व्यवहार और भाषाएँ शामिल हैं। इस अध्ययन में वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक अनुसंधान डिज़ाइन का उपयोग किया जाएगा, जो सरकारी कल्याणकारी योजनाओं और आदिवासी समुदाय की स्थिति के बीच संबंधों की जांच करेगा। 500 उत्तरदाताओं का चयन किया जाएगा, जो सांख्यिकीय रूप से विश्वसनीय परिणाम प्रदान करने के लिए Cochran's Formula के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस अध्ययन में बड़े नमूना आकार का उपयोग किया गया है ताकि निष्कर्ष अधिक सटीक और सार्वभौमिक हो सकें, जिससे सामान्यीकरण की संभावना बढ़े। अनुसंधान की सफलता अनुसंधान उपकरणों और मापन तकनीकों की उपयुक्तता और विश्वसनीयता पर निर्भर करती है। प्रमुख उपकरणों में प्रश्नावली, साक्षात्कार और अवलोकन शामिल हैं, जबकि इस अध्ययन में संरचित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। मापन में सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिक्षा स्तर, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता जैसे पहलुओं का विश्लेषण किया जाएगा। SPSS में विभिन्न परीक्षणों का उपयोग किया जाएगा, जैसे Chi-square Test, Correlation Analysis, और Regression Analysis, ताकि परिकल्पनाओं की जाँच और चर संबंधों को समझा जा सके। यह अध्ययन समावेशी और स्थायी विकास के लिए एक इंटीग्रेटेड पॉलिसी अप्रोच की सिफारिश करता है, और आदिवासी महिलाओं के स्थायी सशक्तिकरण के लिए संरचनात्मक सुधारों की आवश्यकता पर जोर देता है।

मूल शब्दः जनगणना, अनुसूचित, संरचनात्मक, अधिसूचित, समावेशी

1. प्रस्तावना

जनजातीय समुदाय मुख्यतः वनाच्छादित और दूरस्थ क्षेत्रों में संकेंद्रित हैं, जहाँ उन्हें सामाजिक-आर्थिक हाशिए पर गहरी जड़ें जमाए हुए हैं। इसके जवाब में, भारत सरकार ने उनके जीवन स्तर में सुधार, बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ और रोज़गार के अवसर प्रदान करने तथा उनके अधिकारों की रक्षा के उद्देश्य से कई कल्याणकारी योजनाएँ बनाई हैं। जनजातीय लोग भारतीय जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। किसी भी अर्थव्यवस्था का विकास आदिवासियों के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास से सकारात्मक रूप से जुड़ा होता है। किसी भी अर्थव्यवस्था का विकास उसकी अतीत की विरासत को वर्तमान से जोड़ता है। इस अध्याय में जनजातियों को परिभाषित करने और भारत में उनकी महत्वपूर्ण स्थिति को स्थापित करने का प्रयास किया गया है। भारतीय उपमहाद्वीप में दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी जनजातीय आबादी है।

भारत के जनजातीय समूहों का सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन एक जनजाति से दूसरी जनजाति और एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न होता है। वे विभिन्न जातीय समूहों से आते हैं, उनकी अर्थव्यवस्था, तकनीक और धार्मिक व्यवहार का स्वरूप अलग-अलग होता है और वे अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोलते हैं। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही जनजातीय समस्याओं ने समाज सुधारकों और राजनीतिक नेताओं का विशेष ध्यान आकर्षित किया है। इसलिए, जनजातीय लोगों के जीवन में बदलाव लाने के उद्देश्य से योजनाबद्ध प्रयास किए गए हैं और अनेक नवीन योजनाएँ, कार्यक्रम, संरचनाएँ और संस्थाएँ बनाई गई हैं। जनजातीय लोग अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं और विविध भौगोलिक परिवेश के कारण एक अलग सामाजिक समूह का निर्माण करते हैं। जनजातीय लोगों की अपनी भावना, विश्वदृष्टि और सामुदायिक भावना तथा अपनी जीवन शैली होने के कारण, कभी-कभी विकास कार्यक्रमों के नियोजित तरीकों को लेकर वे भ्रमित हो जाते हैं।

भारत समावेशी विकास की वकालत करता है, लेकिन शिक्षा और कौशल विकास के अभाव में, हाशिए पर पड़े वर्ग समावेशी विकास का हिस्सा नहीं बन पा रहे हैं। समावेशी विकास सुनिश्चित करने के

लिए, संविधान ने पिछड़े वर्गों को शिक्षा और नौकरियों में आरक्षण देकर सशक्त बनाया है। इस उद्देश्य से, भारतीय संविधान ने अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों को शिक्षा तक पहुँच प्रदान करने के लिए कुछ विशेष प्रावधान निर्धारित किए हैं। ये विशेष प्रावधान 1951 में संविधान संशोधन के माध्यम से अपनाए गए थे, और अनुच्छेद 15 में एक विशेष खंड जोड़ा गया था। यह खंड राज्य को अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के शैक्षिक विकास के लिए विशेष प्रावधान करने का अधिकार देता है।

आदिम समाज का एक सदस्य अपनी आजीविका कमाना, अच्छे कार्य करना, आध्यात्मिक शक्तियों का पालन करना और अंधविश्वासों आदि को समाज के बुजुर्गों से सीखता है और उसके नियमों और विनियमों से बंधा होता है। यही उनके लिए शिक्षा है। हम आधुनिक लोग, "पढ़ना-लिखना" ही शिक्षा मानते हैं और आधुनिक शिक्षा से व्यक्ति अपने ज्ञान को बढ़ा सकता है, अपनी दृष्टि का विस्तार कर सकता है और विकास के फल प्राप्त कर सकता है। इसलिए, आधुनिक शिक्षा सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में परिवर्तन लाने में उत्प्रेरक की भूमिका निभा सकती है।

भारत की जनसंख्या में आदिवासियों का एक बड़ा हिस्सा है। कई मामलों में, वे गैर-आदिवासी समकक्षों से पीछे हैं। उनकी स्थिति में सुधार के लिए, उनकी शिक्षा पर काफ़ी ध्यान दिया गया है। भारत सरकार और घटक राज्य सरकारों ने आदिवासी बच्चों में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं। इसके अतिरिक्त, आदिवासियों में साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए एकीकृत जनजातीय विकास एजेंसी परियोजनाओं के अंतर्गत अलग से स्कूल स्थापित किए गए हैं। इन प्रयासों के बावजूद, आदिवासियों में शिक्षा का विकास और साक्षरता दर कम पाई गई (वही)।

2. साहित्य की समीक्षा

कुमार, एट अल. (2023) [1]. भारत की जनजातीय आबादी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान, परंपराओं और मान्यताओं वाला एक बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है। भारत सरकार ने उनके सामाजिक-आर्थिक विकास में सहायता के लिए कई कार्यक्रम और योजनाएँ शुरू की हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य जनजातीय आबादी को आवास, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और स्वच्छता जैसी बुनियादी ज़रूरतें प्रदान करना है। नागालैंड सरकार ने राज्य के भीतर जनजातीय समुदायों के सामाजिक-आर्थिक विकास में सहायता के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य जनजातीय समुदायों को उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाने और उनके जीवन स्तर, शिक्षा और स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में सहायता के लिए वित्तीय और अन्य प्रकार की सहायता प्रदान करना है।

वाल्वी, एट अल. (2015) [2]. जनजातीय उप-योजना रणनीति ने जनजातीय क्षेत्रों के एकीकृत विकास की उम्मीदें जगाई थीं। हालाँकि, इसके कार्यान्वयन के चार दशकों में अधिकांश जनजातीय लोगों के जीवन में कोई प्रत्यक्ष परिवर्तन नहीं आया है। जनजातियों के पास स्वयं अपने विकास के लिए योजना और कार्यान्वयन तक पहुँच नहीं थी। योजना के लिए सांख्यिकीय और सांस्कृतिक डेटा बेस कमजोर रहा है और आज भी है। विशेष रूप से, योजना के लिए राज्य की धारणा सूक्ष्म और स्थूल दोनों नियोजन में अपूर्ण थी। इसके परिणामस्वरूप अंततः जनजातीय लोगों के लिए योजनाओं और कार्यक्रमों का असंतोषजनक कार्यान्वयन हुआ। वर्तमान अध्ययन इन विचारों का समर्थन करता है। यह अध्ययन क्षेत्र में जनजातीय विकास के क्षेत्र में अब तक के प्रयासों की समग्र समीक्षा का प्रयास करता है।

मेडा, एट अल. (2022) [3]. बैगा जनजाति के लिए नीतिगत हस्तक्षेप और विकासात्मक कल्याण कार्यक्रमों के प्रभाव पर एक अध्ययन।. भारतीय संविधान अनुसूचित जनजातियों (एसटी) को विशेष दर्जा देता है। बैगा मध्य भारत के वनाच्छादित क्षेत्रों में निवास करने वाली एक छोटी जनजाति है। वे वनों और चिकित्सा के अपने व्यापक ज्ञान के लिए जाने जाते हैं। बैगा इंडो आर्यन द्रविड़ जनजातियों से जुड़े हैं जिनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति और जीवन शैली अद्वितीय है। बैगा की कमाई का बड़ा हिस्सा भोजन और कपड़ों पर खर्च होता है।

कुमार, एट अल. (2024) [4]. अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विविधता और बढ़ती जनसंख्या के कारण, भारत ने पिछले कुछ दशकों में आर्थिक विकास में उल्लेखनीय प्रगति की है। इस विकास के बीच, भारत सरकार ने देश भर में व्याप्त सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों से निपटने के उद्देश्य से कई विकासात्मक योजनाएँ शुरू की हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, ग्रामीण विकास और गरीबी उन्मूलन जैसे विविध क्षेत्रों में फैली ये पहल, समावेशी विकास को बढ़ावा देने और अपनी विशाल एवं विविध आबादी के जीवन स्तर में सुधार लाने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती हैं। इस शोध का उद्देश्य सर्वेक्षणों और साक्षात्कारों के माध्यम से क्षेत्र के आदिवासी समुदायों के कल्याण पर विभिन्न पहलों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करके, हिमाचल प्रदेश में आदिवासी आबादी के लिए सतत और समग्र विकास को बढ़ावा देते हुए, विकासात्मक योजनाओं के प्रभाव को अनुकूलित करने हेतु व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करना है।

ए., प्रशांत एट अल. (2021) [5]. केंद्र और राज्य सरकार ने जनजातियों के कल्याण के लिए देश भर में कई आदिवासी विकास योजनाएं लागू की हैं। लेकिन, क्या जनजातियों ने इन योजनाओं का वास्तविक लाभ महसूस किया है, यह एक बड़ा सवाल है। आदिवासी विकास योजनाओं के प्रति जनजातियों के रवैये का विश्लेषण करके इसे मापा जा सकता है। इस संदर्भ में, तीन जिलों: सलेम, तिरुवन्नामलाई और विलुप्पुरम का प्रतिनिधित्व करने वाले जवाधु पहाड़ियों और कालरायन पहाड़ियों की जनजातियों के बीच एक सर्वेक्षण किया गया था। अध्ययन से पता चला कि 35.19 प्रतिशत आदिवासी उत्तरदाताओं का आदिवासी विकास योजनाओं के प्रति अत्यधिक अनुकूल रवैया था, इसके बाद प्रतिशत कम अनुकूल रवैया और 31.48 प्रतिशत आदिवासी उत्तरदाताओं का आदिवासी विकास योजनाओं के प्रति मध्यम अनुकूल रवैया था। निष्कर्षों के संभावित कारण और आदिवासी विकास योजनाओं के पक्ष में अनुसूचित जनजातियों के रवैये में सुधार के सुझावों का वर्णन किया गया है।

3. अनुसंधान पद्धति

3.1 अनुसंधान डिज़ाइन

इस अध्ययन के लिए वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) अनुसंधान डिज़ाइन का प्रयोग किया जाएगा। अनुसंधान डिज़ाइन किसी भी शोध की रूपरेखा होती है, जो यह स्पष्ट करती है कि अध्ययन किस प्रकार संचालित किया जाएगा और उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु कौन-सी विधियाँ अपनाई जाएँगी। प्रस्तुत शोध में यह दृष्टिकोण इसलिए उपयुक्त है क्योंकि इसमें न केवल तथ्यात्मक स्थितियों का विवरण देना है, बल्कि उन परिकल्पनाओं की भी जाँच करनी है जो सरकारी कल्याणकारी

योजनाओं के प्रभाव और आदिवासी समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बीच संबंधों को स्पष्ट करती हैं।

3.2 नमूना आकार

अध्ययन हेतु कुल 500 उत्तरदाताओं (Respondents) का चयन किया जाएगा। यह संख्या इस उद्देश्य से चुनी गई है कि प्राप्त आँकड़े न केवल प्रतिनिधि (Representative) हों बल्कि सांख्यिकीय रूप से भी विश्वसनीय परिणाम प्रदान कर सकें। नमूना आकार का निर्धारण Cochran's Formula के आधार पर किया गया है, जो जनसंख्या के आकार, अनुमेय त्रुटि (Margin of Error) और विश्वसनीयता स्तर (Confidence Level) को ध्यान में रखकर तय किया जाता है। बड़े नमूना आकार से यह सुनिश्चित होगा कि अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष अधिक सटीक और सार्वभौमिक हों तथा सामान्यीकरण (Generalization) की संभावना बढ़े।

3.3 डेटा संग्रह की विधियाँ

किसी भी शोध की विश्वसनीयता इस बात पर निर्भर करती है कि डेटा संग्रह किस प्रकार से किया गया है और उसके स्रोत कितने सटीक हैं। प्रस्तुत अध्ययन में डेटा संग्रह हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया जाएगा। इससे प्राप्त सूचनाएँ न केवल प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित होंगी बल्कि आधिकारिक दस्तावेज़ों और प्रकाशित स्रोतों से भी पुष्ट होंगी।

3.4 डेटा विश्लेषण योजना

किसी भी सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में डेटा विश्लेषण की योजना अनुसंधान की गुणवत्ता और परिणामों की प्रामाणिकता को निर्धारित करती है। प्रस्तुत अध्ययन में एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण SPSS (Statistical Package for the Social Sciences) software की सहायता से किया जाएगा। SPSS एक व्यापक रूप से प्रयोग होने वाला सांख्यिकीय सॉफ़्टवेयर है, जो शोधकर्ताओं को मात्रात्मक आँकड़ों को व्यवस्थित करने, विभिन्न सांख्यिकीय परीक्षण लागू करने और निष्कर्ष निकालने में अत्यंत सहायक होता है। इस अध्ययन में SPSS का प्रयोग यह सुनिश्चित करेगा कि प्राप्त डेटा का विश्लेषण वैज्ञानिक, व्यवस्थित और उच्च विश्वसनीयता (Reliability) के साथ किया जा सके।

3.5 अध्ययन के प्रमुख चरों का क्षेत्रीय संदर्भ

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त प्रमुख चर—शिक्षा, योजनाओं के प्रति जागरूकता तथा सरकारी योजनाओं का प्रभाव—को अध्ययन क्षेत्र की वास्तविक परिस्थितियों के संदर्भ में समझना आवश्यक है। ग्राम भरथरी में प्राथमिक विद्यालय की उपलब्धता होने के बावजूद आर्थिक बाधाओं एवं श्रम आधारित जीवनशैली के कारण शिक्षा की निरंतरता प्रभावित होती है।

आय का मुख्य स्रोत दिहाड़ी मजदूरी होने के कारण परिवारों की प्राथमिकता आजीविका अर्जन पर केंद्रित रहती है, जिससे बच्चों की शिक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त, प्रधानमंत्री आवास योजना, सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS), आयुष्मान भारत योजना एवं अन्य राज्य स्तरीय योजनाओं की उपलब्धता ने समुदाय के जीवन स्तर में सुधार किया है, किंतु इन योजनाओं पर बढ़ती निर्भरता आत्मनिर्भरता की प्रक्रिया को सीमित करती है। इस प्रकार, अध्ययन में प्रयुक्त सभी चर क्षेत्रीय यथार्थ से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं, जिससे विश्लेषण अधिक व्यावहारिक एवं प्रमाणिक बनता है।

4. परिणाम एवं चर्चा

4.1 जनसांख्यिकीय जानकारी: जनसांख्यिकीय जानकारी किसी भी सामाजिक अनुसंधान अध्ययन का आधारभूत और अनिवार्य घटक होती है, क्योंकि यह उत्तरदाताओं की मूलभूत पृष्ठभूमि और सामाजिक संरचना को स्पष्ट करती है। इसके अंतर्गत लिंग, आयु, वैवाहिक स्थिति, शैक्षिक योग्यता और परिवार का आकार जैसी सूचनाएँ सम्मिलित की जाती हैं, जो अध्ययन क्षेत्र के सामाजिक परिदृश्य को समझने में सहायक होती हैं।

अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयनित ग्राम भरथरी (मध्यप्रदेश) में कुल 100 आदिवासी परिवार निवास करते हैं, जिनकी कुल जनसंख्या लगभग 650 है। जनसंख्या संरचना के अनुसार पुरुषों की संख्या 160, महिलाओं की संख्या 150 तथा बच्चों की संख्या 340 है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि बाल जनसंख्या का अनुपात अधिक है। एक परिवार में औसतन 6 सदस्य पाए जाते हैं, जो पारिवारिक संरचना की विशेषता को दर्शाता है।

आर्थिक दृष्टि से अधिकांश परिवार दिहाड़ी मजदूरी एवं कृषि मजदूरी पर निर्भर हैं, जिससे आय की स्थिरता सीमित है। यह सामाजिक-आर्थिक स्थिति शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अन्य बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता और उपयोग पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। अतः जनसांख्यिकीय विश्लेषण में इन तथ्यों को सम्मिलित करना अध्ययन के निष्कर्षों को अधिक यथार्थपरक बनाता है।

इस प्रकार की जानकारी शोधकर्ता को यह आकलन करने में मदद करती है कि विभिन्न जनसांख्यिकीय समूहों में सरकारी योजनाओं, शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका और बुनियादी सुविधाओं की पहुँच और प्रभाव किस प्रकार भिन्न-भिन्न रूप से परिलक्षित होते हैं। कुल मिलाकर, जनसांख्यिकीय जानकारी अध्ययन की समग्र दिशा निर्धारित करने, आंकड़ों की व्याख्या करने और निष्कर्षों को अधिक सटीक और उपयोगी बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

तालिका 1: लिंग

लिंग				
	आवृत्ति	**प्रतिशत**	**मान्य प्रतिशत**	**संचयी प्रतिशत**
पुरुष	291	58.2	58.2	58.2
महिला	209	41.8	41.8	100.0
कुल	500	100.0	100.0	

उपरोक्त तालिका लिंग वितरण को प्रस्तुत करती है, जिसमें कुल 500 उत्तरदाताओं को शामिल किया गया है। आँकड़ों से पता चलता है कि उत्तरदाताओं में पुरुषों की संख्या 291 है, जो कुल का 58.2% है, जबकि महिलाओं की संख्या 209 है, जो कुल का 41.8% है। यह वितरण स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि अध्ययन में पुरुष उत्तरदाताओं का अनुपात महिलाओं की तुलना में अधिक है। इसका एक कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण और आदिवासी समाज में पारिवारिक निर्णयों और बाहरी गतिविधियों में पुरुषों की भागीदारी अपेक्षाकृत अधिक होती है, जिसके चलते सर्वेक्षण में उनकी उपस्थिति अधिक दर्ज की गई। वहीं, महिलाओं की भागीदारी 41.8% होना भी यह दर्शाता है कि अध्ययन में लिंग आधारित संतुलन बनाए रखने का प्रयास किया गया है और महिलाओं की राय को भी महत्व दिया गया है। इस तरह यह तालिका न केवल उत्तरदाताओं के लिंग अनुपात को स्पष्ट करती है, बल्कि यह भी इंगित करती है कि दोनों ही वर्गों की भागीदारी ने अध्ययन के निष्कर्षों को अधिक विश्वसनीय और व्यापक बनाने में योगदान दिया है।

तालिका 2: आयु

आयु				
	आवृत्ति	प्रतिशत	मान्य प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
18 वर्ष से कम	177	35.4	35.4	35.4
18–30 वर्ष	75	15.0	15.0	50.4
31–45 वर्ष	76	15.2	15.2	65.6
46–60 वर्ष	66	13.2	13.2	78.8
60 वर्ष से अधिक	106	21.2	21.2	100.0
कुल	500	100.0	100.0	

उपरोक्त तालिका आयु वितरण को दर्शाती है, जिसमें कुल 500 उत्तरदाताओं को पाँच आयु समूहों में वर्गीकृत किया गया है। आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक उत्तरदाता *18 वर्ष से कम आयु वर्ग* में आते हैं, जिनकी संख्या 177 है, जो कुल का 35.4% है। यह दर्शाता है कि अध्ययन क्षेत्र में बालक और किशोरों की जनसंख्या अधिक है, जो शिक्षा और साक्षरता से संबंधित नीतियों के लिए एक महत्वपूर्ण संकेतक है। इसके बाद *60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग* के उत्तरदाता 106 (21.2%) पाए गए, जो यह इंगित करता है कि क्षेत्र में वृद्ध जनसंख्या का भी पर्याप्त अनुपात मौजूद है। *31–45 वर्ष* आयु वर्ग के 76 (15.2%) तथा *18–30 वर्ष* आयु वर्ग के 75 (15.0%) उत्तरदाता मिले, जो कार्यशील और उत्पादक आयु वर्ग को दर्शाते हैं और यह समुदाय की आजीविका तथा आर्थिक गतिविधियों के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। वहीं *46–60 वर्ष* आयु वर्ग के 66 (13.2%) उत्तरदाता पाए गए, जो मध्यम आयु समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुल मिलाकर, यह वितरण स्पष्ट करता है कि अध्ययन क्षेत्र में युवा और वृद्ध दोनों वर्गों का अनुपात उल्लेखनीय है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि योजनाओं और सुविधाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका जैसे क्षेत्रों में सभी आयु वर्गों को ध्यान में रखकर तैयार करना आवश्यक है।

तालिका 3: वैवाहिक स्थिति

वैवाहिक स्थिति				
	आवृत्ति	प्रतिशत	मान्य प्रतिशत	संचयी प्रतिशत
अविवाहित	219	43.8	43.8	43.8
विवाहित	182	36.4	36.4	80.2
विधवा/विधुर	99	19.8	19.8	100.0
कुल	500	100.0	100.0	

4.2 विश्वसनीयता विश्लेषण

विश्वसनीयता विश्लेषण किसी भी शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणों और प्रश्नावली की गुणवत्ता को मापने का एक महत्वपूर्ण सांख्यिकीय तरीका है। इसका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि एक ही चर (Variable) को मापने वाले प्रश्न कितने हद तक एक समान और सुसंगत परिणाम प्रदान कर रहे हैं। यदि किसी प्रश्नावली या स्केल का विश्वसनीयता स्तर उच्च होता है, तो इसका अर्थ है कि उससे प्राप्त आंकड़े बार-बार प्रयोग किए जाने पर भी स्थिर और भरोसेमंद होंगे। शोध कार्यों में सबसे अधिक प्रयुक्त मापदंड क्रोनबाख का अल्फा (Cronbach's Alpha) है, जो यह दर्शाता है कि किसी विशेष स्केल या प्रश्नावली के अंतर्गत आने वाले प्रश्न एक-दूसरे से कितने आंतरिक रूप से जुड़े हुए हैं।

सामान्यतः 0.70 या उससे अधिक का क्रोनबाख अल्फा मान स्वीकार्य माना जाता है, जबकि 0.80 या उससे ऊपर का मान उच्च विश्वसनीयता का संकेत देता है। इस अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिक्षा और साक्षरता, बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच, योजनाओं के प्रति जागरूकता, योजनाओं की पहुँच और प्रभाव, तथा समुदाय की भागीदारी जैसे विभिन्न आयामों के लिए विश्वसनीयता परीक्षण किया गया है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि प्रत्येक आयाम को मापने वाले प्रश्न भरोसेमंद हैं और शोध निष्कर्ष वैज्ञानिक दृष्टि से मान्य और सटीक सिद्ध हों।

तालिका 4: विश्वसनीयता सांख्यिकी

विश्वसनीयता सांख्यिकी		
Variable	Cronbach's alpha	कुल
सामाजिक-आर्थिक स्थिति	0.905	4
शिक्षा और साक्षरता	0.769	4
बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच	0.779	4
योजनाओं के प्रति जागरूकता	0.834	4
योजनाओं की पहुँच और प्रभाव	0.708	4
समुदाय की भागीदारी और सहभागिता	0.722	4

यहाँ प्रस्तुत विश्वसनीयता सांख्यिकी तालिका से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में प्रयुक्त सभी मापदंडों और उनसे संबंधित प्रश्नावली आइटम्स का Cronbach's Alpha मान स्वीकार्य स्तर पर है, जो प्रश्नावली की आंतरिक संगति को दर्शाता है। सामान्यतः सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में 0.70 या उससे अधिक का Cronbach's Alpha मान संतोषजनक माना जाता है। इस अध्ययन में "सामाजिक-आर्थिक स्थिति" का Cronbach's Alpha 0.905 प्राप्त हुआ है, जो अत्यंत उच्च स्तर की विश्वसनीयता को दर्शाता है। इसी प्रकार "योजनाओं के प्रति जागरूकता" (0.834) और "बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच" (0.779) भी अच्छे स्तर की विश्वसनीयता को प्रदर्शित करते हैं।

"शिक्षा और साक्षरता" (0.769), "समुदाय की भागीदारी और सहभागिता" (0.722) तथा "योजनाओं की पहुँच और प्रभाव" (0.708) का Cronbach's Alpha मान भी स्वीकार्य स्तर से ऊपर है, जो यह दर्शाता है कि इन सभी चरों के लिए तैयार किए गए प्रश्न परस्पर संबंधित एवं सुसंगत हैं। समग्र रूप से कहा जा सकता है कि इस अध्ययन की प्रश्नावली विश्वसनीय है और एक ही चर से संबंधित प्रश्न समान प्रकार के निष्कर्ष देने में सक्षम हैं। यह परिणाम अध्ययन के निष्कर्षों को अधिक वैज्ञानिक और भरोसेमंद बनाता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि विश्लेषण और परिकल्पनाओं की जाँच सही आधार पर की जा रही है।

4.3 वर्णनात्मक विश्लेषण

वर्णनात्मक विश्लेषण किसी भी शोध अध्ययन में संकलित आंकड़ों की प्रारंभिक जाँच और समझ का सबसे महत्त्वपूर्ण चरण है। इसका उद्देश्य आंकड़ों का सार प्रस्तुत करना, उनका स्वरूप स्पष्ट करना तथा शोध के प्रमुख रुझानों (Trends) और पैटर्न को उजागर करना होता है। इस विश्लेषण के अंतर्गत औसत (Mean), माध्यिका (Median), बहुलक (Mode), मानक विचलन (Standard Deviation), प्रतिशत (%) और आवृत्ति (आवृत्ति) जैसे सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग किया जाता है।

वर्णनात्मक विश्लेषण के माध्यम से शोधकर्ता यह समझ पाता है कि उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाएँ किन विषयों पर केंद्रित हैं, कौन-सी श्रेणियाँ अधिक प्रभावी हैं और आंकड़ों में किस प्रकार का प्रसार (Dispersion) मौजूद है। यह विश्लेषण न केवल आंकड़ों की सामान्य तस्वीर प्रस्तुत करता है, बल्कि आगे के उन्नत सांख्यिकीय परीक्षणों (जैसे सहसंबंध, प्रतिगमन और t-परीक्षण) के लिए आधार भी तैयार करता है। इस अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक स्थिति,

शिक्षा और साक्षरता, बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच, योजनाओं के प्रति जागरूकता, योजनाओं की प्रभावशीलता तथा समुदाय की भागीदारी जैसे प्रमुख आयामों पर वर्णनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि उत्तरदाताओं के अनुभव और धारणा किस दिशा में केंद्रित हैं और किन पहलुओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

तालिका 5: सामाजिक-आर्थिक स्थिति का वर्णनात्मक आँकड़ा

	कुल	**औसत मान (Mean)**	**मानक विचलन (Std. Deviation)**
मेरे परिवार की आय दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त है।	500	4.05	0.854
मुझे और मेरे परिवार को नियमित रूप से रोजगार/काम उपलब्ध रहता है।	500	4.01	0.901
मेरा घर बुनियादी सुविधाओं (बिजली, पानी, शौचालय) से युक्त है।	500	4.12	0.779
सरकारी योजनाओं ने मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार किया है।	500	3.99	0.955
कुल	500		

इस तालिका में प्रस्तुत सामाजिक-आर्थिक स्थिति का वर्णनात्मक आँकड़ा यह दर्शाता है कि सहरिया जनजाति के उत्तरदाताओं की स्थिति औसतन सकारात्मक है, हालाँकि विभिन्न पहलुओं में थोड़े-बहुत अंतर भी देखे गए हैं। *"मेरे परिवार की आय दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त है"* कथन का औसत मान (Mean) 4.05 और मानक विचलन (Std. Deviation) 0.854 है, जो यह संकेत देता है कि अधिकांश उत्तरदाताओं ने अपनी आय को पर्याप्त माना है, हालांकि कुछ में भिन्नता मौजूद है। इसी प्रकार, *"मुझे और मेरे परिवार को नियमित रूप से रोजगार/काम उपलब्ध रहता है"* का औसत मान 4.01 और मानक विचलन 0.901 है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि रोजगार की उपलब्धता अपेक्षाकृत संतोषजनक है, परंतु इसमें स्थिरता और निरंतरता की कमी कुछ परिवारों के लिए चुनौती बनी हुई है। *"मेरा घर बुनियादी सुविधाओं (बिजली, पानी, शौचालय) से युक्त है"* का औसत मान सबसे अधिक 4.12 है, जो दर्शाता है कि अधिकांश परिवारों के घर आवश्यक सुविधाओं से लैस हैं और इसमें उत्तरदाताओं की राय में अपेक्षाकृत एकरूपता भी पाई गई (Std. Deviation = 0.779)।
वहीं, *"सरकारी योजनाओं ने मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार किया है"* का औसत मान 3.99 और मानक विचलन 0.955 है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि योजनाओं ने अधिकांश परिवारों को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है, हालांकि योजनाओं के क्रियान्वयन और पहुँच में कुछ अंतराल बने हुए हैं। समग्र रूप से इस तालिका से यह निष्कर्ष निकलता है कि सहरिया जनजाति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में आय, रोजगार, बुनियादी सुविधाओं और सरकारी योजनाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, लेकिन इसकी स्थिरता और समानता सुनिश्चित करने के लिए अभी भी ठोस नीतिगत और व्यावहारिक प्रयासों की आवश्यकता है।

तालिका 6: शिक्षा और साक्षरता का वर्णनात्मक आँकड़ा

	कुल	**औसत मान (Mean)**	**मानक विचलन (Std. Deviation)**
हमारे क्षेत्र में विद्यालय तक पहुँचना आसान है।	500	3.95	0.995
सरकारी योजनाओं से बच्चों के स्कूल नामांकन में वृद्धि हुई है।	500	3.59	1.012
छात्रवृत्ति और अन्य शैक्षिक सुविधाओं का लाभ हमें मिला है।	500	4.02	0.872
शिक्षा ने हमारे जीवन स्तर को बेहतर बनाने में मदद की है।	500	3.92	1.147
कुल	500		

शिक्षा और साक्षरता का वर्णनात्मक आँकड़ा यह दर्शाता है कि अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा तक पहुँच और उससे होने वाले प्रभाव को लेकर उत्तरदाताओं की राय सामान्यतः सकारात्मक है, किंतु इसमें कुछ विविधताएँ भी देखी गई हैं। *"हमारे क्षेत्र में विद्यालय तक पहुँचना आसान है"* का औसत मान (Mean) 3.95 और मानक विचलन (Std. Deviation) 0.995 पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता विद्यालय तक पहुँच को सुगम मानते हैं, परंतु कुछ स्थानों पर यह सुविधा समान रूप से उपलब्ध नहीं है।
"सरकारी योजनाओं से बच्चों के स्कूल नामांकन में वृद्धि हुई है" का औसत मान 3.59 है, जो अन्य कथनों की तुलना में कम है और यह संकेत देता है कि नामांकन में कुछ सुधार तो हुआ है, परंतु यह अभी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँचा है; मानक विचलन 1.012 यह भी दर्शाता है कि इस विषय पर उत्तरदाताओं की राय में उल्लेखनीय अंतर है। वहीं, *"छात्रवृत्ति और अन्य शैक्षिक सुविधाओं का लाभ हमें मिला है"* का औसत मान 4.02 और मानक विचलन 0.872 पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश परिवार इन सुविधाओं से लाभान्वित हो रहे हैं।
अंततः *"शिक्षा ने हमारे जीवन स्तर को बेहतर बनाने में मदद की है"* का औसत मान 3.92 और मानक विचलन 1.147 है, जो यह बताता है कि शिक्षा ने जीवन स्तर में सुधार लाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, किंतु सभी परिवार समान रूप से लाभान्वित नहीं हो पाए हैं। कुल मिलाकर, यह आँकड़ा इंगित करता है कि शिक्षा तक पहुँच और शैक्षिक योजनाओं ने सहरिया जनजाति की स्थिति में सकारात्मक बदलाव लाए हैं, परंतु नामांकन और शिक्षा के सतत लाभ में अभी भी सुधार की आवश्यकता है।

तालिका 7: बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच का वर्णनात्मक आँकड़ा

	कुल	**औसत मान (Mean)**	**मानक विचलन (Std. Deviation)**
हमारे गाँव में स्वास्थ्य केंद्र तक पहुँचना आसान है।	500	3.75	1.145
पेयजल की सुविधा हमारे गाँव में नियमित रूप से उपलब्ध है।	500	4.01	1.172
सड़क और परिवहन सुविधाएँ हमारे क्षेत्र में पर्याप्त हैं।	500	4.11	0.938
सरकार द्वारा दी गई आवास/बिजली योजनाओं से हमें लाभ मिला है।	500	4.16	0.998
कुल	500		

बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच का वर्णनात्मक आँकड़ा यह दर्शाता है कि सहरिया जनजाति के क्षेत्र में आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता को लेकर उत्तरदाताओं की राय सामान्यतः सकारात्मक है, किंतु इसमें कुछ असमानताएँ भी मौजूद हैं। *"हमारे गाँव में स्वास्थ्य केंद्र तक पहुँचना आसान है"* का औसत मान (Mean) 3.75 और मानक विचलन (Std. Deviation) 1.145 पाया गया, जो यह दर्शाता है कि स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच में सुधार तो है, लेकिन यह सुविधा सभी गाँवों में समान रूप से उपलब्ध नहीं है और इसमें भौगोलिक दूरी या संसाधनों की कमी की चुनौतियाँ बनी हुई हैं। *"पेयजल की सुविधा हमारे गाँव में नियमित रूप से उपलब्ध है"* का औसत मान 4.01 और मानक विचलन 1.172 है, जो यह इंगित करता है कि अधिकांश परिवार नियमित जल आपूर्ति से संतुष्ट हैं, हालांकि कुछ क्षेत्रों में असंगति बनी हुई है। *"सड़क और परिवहन सुविधाएँ हमारे क्षेत्र में पर्याप्त हैं"* का औसत मान 4.11 और मानक विचलन 0.938 पाया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सड़क और परिवहन व्यवस्था अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति में है और लोगों को आवागमन में सुविधा मिल रही है। अंततः *"सरकार द्वारा दी गई आवास/बिजली योजनाओं से हमें लाभ मिला है"* का औसत मान 4.16 और मानक विचलन 0.998 पाया गया है, जो सबसे अधिक है, यह दर्शाता है कि इस योजना से परिवारों को व्यापक लाभ मिला है और यह सुविधा अपेक्षाकृत समान रूप से उपलब्ध कराई गई है। समग्र रूप से देखा जाए तो यह आँकड़े इस बात की पुष्टि करते हैं कि सहरिया जनजाति को बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच में सुधार का अनुभव हुआ है, हालांकि स्वास्थ्य और पेयजल जैसी सेवाओं में अब भी निरंतरता और सार्वभौमिकता सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

तालिका 8: योजनाओं के प्रति जागरूकता का वर्णनात्मक आँकड़ा

	कुल	**औसत मान (Mean)**	**मानक विचलन (Std. Deviation)**
मुझे विभिन्न सरकारी योजनाओं (शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार) की जानकारी है।	500	4.07	0.963
योजनाओं की जानकारी हमें पंचायत/सरकारी अधिकारियों से मिलती है।	500	3.93	0.994
NGO/स्वयंसेवी संस्थाओं ने हमें सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूक किया है।	500	4.14	0.950
सरकारी योजनाओं की जानकारी आसानी से उपलब्ध होती है।	500	4.18	1.063
कुल	500		

योजनाओं के प्रति जागरूकता का वर्णनात्मक आँकड़ा यह स्पष्ट करता है कि सहरिया जनजाति के लोगों में सरकारी योजनाओं की जानकारी का स्तर अपेक्षाकृत अच्छा है, किंतु इसमें स्रोत और पहुँच की विविधता देखी जा सकती है। *"मुझे विभिन्न सरकारी योजनाओं (शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार) की जानकारी है"* का औसत मान 4.07 और मानक विचलन 0.963 पाया गया है, जो दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदाता योजनाओं की जानकारी रखते हैं और यह जागरूकता समुदाय में सामान्य रूप से मौजूद है।

5. निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र ग्राम भरथरी के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि सरकारी योजनाओं की उपलब्धता एवं पहुँच ने जनजातीय समुदाय के जीवन स्तर में सुधार लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, किंतु इन योजनाओं पर बढ़ती निर्भरता आत्मनिर्भरता के विकास में बाधा उत्पन्न करती है। अधिकांश परिवारों की आजीविका दिहाड़ी मजदूरी पर आधारित होने के कारण शिक्षा को प्राथमिकता नहीं मिल पाती, जिससे बच्चों की साक्षरता एवं उच्च शिक्षा में प्रगति सीमित रहती है। इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण के बीच संतुलन स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि जनजातीय समुदाय का समग्र एवं सतत विकास सुनिश्चित किया जा सके।

शिक्षा और साक्षरता के क्षेत्र में यह पाया गया कि विद्यालयों तक पहुँच, छात्रवृत्ति एवं शैक्षिक योजनाओं ने सहरिया जनजाति में साक्षरता दर को बढ़ाने में सकारात्मक योगदान दिया है, यद्यपि यह दर अभी भी सामान्य ग्रामीण समुदायों से पीछे है। बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच, जैसे – स्वास्थ्य, परिवहन, पेयजल और बिजली योजनाएँ – जीवन गुणवत्ता को प्रभावित करती हैं और इनके अभाव में समुदाय को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। योजनाओं के प्रति जागरूकता का स्तर मध्यम से उच्च पाया गया, परंतु जागरूकता और लाभ प्राप्ति के बीच सीधा संबंध स्थापित हुआ, जिससे यह सिद्ध हुआ कि सूचना की कमी योजनाओं के प्रभाव को सीमित करती है। वहीं, समुदाय की भागीदारी और पंचायत की सक्रियता योजनाओं के क्रियान्वयन को अधिक प्रभावी और पारदर्शी बनाती है, जिससे योजनाओं का असर सकारात्मक रूप से बढ़ा है। समग्र रूप से, यह अध्ययन दर्शाता है कि योजनाओं ने सहरिया जनजाति की स्थिति सुधारने में उल्लेखनीय योगदान दिया है, किंतु सामाजिक-आर्थिक असमानता, संसाधनों की कमी और भ्रष्टाचार जैसी चुनौतियों के कारण योजनाओं का प्रभाव सीमित हो जाता है। अतः यह आवश्यक है कि जागरूकता, पारदर्शिता और समुदाय की सहभागिता को और मजबूत बनाया जाए ताकि योजनाओं का लाभ पूर्ण रूप से समुदाय तक पहुँचे और आदिवासी समाज के समग्र विकास में सहायक हो।

6. संदर्भ

1. कुमार, जे. सुरेश और डॉ. डी. शोभना। नागालैंड में जनजातीय विकास पर सरकारी योजनाओं का प्रभाव। शानलैक्स इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स।. 2023;11:15-25. 10.34293/economics. v11i3.6184।
2. वाल्वी, दुर्गेश. महाराष्ट्र के नंदुरबार और धुले ज़िलों में जनजातीय विकास पर कल्याणकारी उपायों के प्रभाव का एक अध्ययन।, 2015.
3. मेदा, रवि और स्कॉलर. बैगा जनजाति पर नीतिगत हस्तक्षेप और विकासात्मक कल्याण कार्यक्रमों के प्रभाव पर एक अध्ययन. 2022;4:58-67.
4. कुमार, संजय और शर्मा, मुनीश और चंदेल, सिद्धार्थ। हिमाचल प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में विकास योजनाओं का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव। सकारात्मक. 2024;24:23-37.
5. ए., प्रशांत और पलानीअप्पन, बालासुब्रमण्यम। तमिलनाडु में जनजातीय विकास योजनाओं के प्रति अनुसूचित जनजातियों का दृष्टिकोण। मद्रास एग्रीकल्चरल जर्नल। 2021;107:1-4. 10.29321/MAJ.10.000545।
6. मिंज, सुमित. भारत में जनजातीय विकास नीतियाँ: इसके निहितार्थ और संभावनाएँ, 2020.
7. रफ़ीक, फ़ौमी और राजशेखरन, रमेश। तमिलनाडु के नीलगिरि ज़िले के जैव विविधता क्षेत्र में रहने वाली आदिम जनजातियों द्वारा विभिन्न सरकारी जनजातीय विकास योजनाओं के उपयोग की सीमा। एशियन जर्नल ऑफ़ एग्रीकल्चरल एक्सटेंशन, इकोनॉमिक्स एंड सोशियोलॉजी।, 2021, 250-258. 10.9734/ajaees/2021/v39i1130748।
8. रंगन्नावर, डॉ. और वाई, नागराज और कुमार, मिस्टर और एम, गायथिरी और नायक, हनमंत। जनजातीय विकास के लिए कार्यक्रम और नीतियां। उन्नत इंजीनियरिंग और प्रबंधन पर अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान जर्नल (IRJAEM)। 2024;2:2589-2597. 10.47392/IRJAEM.2024.0376.
9. मोहंती, विकासिता और मित्रा, रत्ना। झारखंड और ओडिशा राज्य में आदिवासी महिलाओं के वित्तीय समावेशन के लिए बनाई गई सरकारी योजनाओं को समझना। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च। 2024;12:437-443. 10.21474/IJAR01/19072।
10. माल्याद्री, पाचा. आदिवासी महिलाओं के सतत विकास के लिए आय सृजन योजनाएँ. मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान समीक्षा. 2020;8:634-641. 10.18510/hssr.2020.8176.
11. चौधरी, किशना और कौशिक, अरुणा और कुलश्रेष्ठ, डॉ. सुरेंद्र। राजस्थान में सहरिया जनजाति के आर्थिक विकास में सरकारी रोजगार सृजन योजनाओं की भूमिका। 2021;45:1-7.
12. शर्मा, भुवनेश और डॉ. सिंह. मध्य प्रदेश के संदर्भ में आदिवासी क्षेत्र की स्थिति को सभ्य बनाने में सरकार की भूमिका।, 2016.
13. कोकाटे, अशोक और स्वामी, विश्वास. महाराष्ट्र राज्य में जनजातीय विकास कार्यक्रम और उसका प्रशासन. अप्रैल-जून. 2020, 104-109.
14. भटनागर, आरती। भारत में जनजातीय सशक्तिकरण के लिए राजनीतिक ढाँचे: सफलताएँ, चुनौतियाँ और सुझाव। शोधकोश: दृश्य एवं प्रदर्शन कला पत्रिका। 2024, 5. 10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.1612।

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.